

---

# Pandurangashtakam

पुण्डुरङ्गाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : pANDurangAShTakam

File name : panduranga8.itx

Category : aShTaka, vishhnu, krishna, vishnu, shankarAchArya

Location : doc\_vishhnu

Author : Shankaracharya

Transliterated by : NA

Proofread by : Sunder Hattangadi

Latest update : April 4, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Pandurangashtakam

---

### पाण्डुरङ्गाष्टकम्

---



महायोगपीठे तटे लीमश्था  
वरं पुण्डरीकाय दातुं मुनीन्द्रैः ।  
समागत्य तिष्ठन्तमानंदकंदं  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ १ ॥

तटिद्वाससं नीलमेघावभासं  
रमामंदिरं सुंदरं चित्रकाशम् ।  
वरं त्विष्टकायां समन्यस्तपादं  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ २ ॥

प्रमाणं भवाब्धेरिदं मामकानां  
नितम्बः कराभ्यां धृतो येन तस्मात् ।  
विधातुर्वसत्यै धृतो नाभिकोशः  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ३ ॥

स्फुरत्कौस्तुभालङ्कृतं कण्ठदेशे  
श्रिया जुष्टकेयूरकं श्रीनिवासम् ।  
शिवं शांतमीज्यं वरं लोकपालं  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ४ ॥

शरच्चंद्रबिंबाननं थारुलासं  
लसत्पुण्डलाकांतगण्डस्थलांतम् ।  
जपारागबिंबाधरं कञ्चनेत्रं  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ५ ॥

किरीटोज्ज्वलत्सर्वदिक्रान्तभागं  
सुरैर्यितं दिव्यरत्नैरनर्घैः ।  
त्रिभङ्गाकृतिं बर्द्धमाख्यावतंसं  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ६ ॥

विभुं वेणुनादं यरंतं दुरंतं  
स्वयं लीलया गोपवेषं दधानम् ।  
गवां वृन्दकानन्दं यारुडासं  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ७ ॥

अजं रुद्धिणीप्राणसञ्जवनं तं  
परं धाम कैवल्यमेकं तुरीयम् ।  
प्रसन्नं प्रपन्नार्तिहं देवदेवं  
परब्रह्मलिङ्गं भजे पाण्डुरङ्गम् ॥ ८ ॥

स्तवं पाण्डुरंगस्य वै पुण्यदं ये  
पठन्त्येकचित्तेन भक्त्या य नित्यम् ।  
भवांभोनिधिं ते वितीर्त्वान्तकाले  
उरेशलयं शाश्वतं प्राप्नुवन्ति ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ  
पाण्डुरङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

---

*Pandurangashtakam*

pdf was typeset on September 16, 2023

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

